ISSN - 2231-1130
वर्ष–सप्तम् ; सितम्बर–2016

वेदों में आग्नेय ऊर्जा के सन्दर्भ

डॉ. स्नेहलता शर्मा*

विश्व वाङ्मय की प्राचीनतम पुस्तक के रूप में स्वीकृत 'ऋग्वेद' का प्रारम्भ 'अग्नि' शब्द से होता है।[1] यह अग्नि क्या है? इसका गुण, धर्म एवं स्वभाव क्या है?

इसका आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक स्वरूप क्या है?भौतिक दृश्यमान् जगत् में किन–किन रूपों में आग्नि विद्यमान है? इस दृश्य एवं अदृश्य स्वरूप अग्नि की शक्ति एवं सामर्थ्य क्या है? क्या अग्नि रहित जगत् की कल्पना सम्भव है? आदि–आदि अनेक प्रश्न हमारे मस्तिष्क में उत्पन्न होते हैं। इन प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में वैदिक वाङ्मय का अनुशीलन करने पर अग्निविज्ञानात्मक अनेक वृत्तान्त विस्तार से देखने को मिलते हैं।

आधुनिक विज्ञान की भौतिकी शाखा में मुख्य रूप से शक्ति (Force), गति (Motion), ऊर्जा (Energy), सामर्थ्य (Power), ताप (Heat), ध्वनि (Sound), प्रकाश (Light), चुम्बकत्व (Maganetism), विद्युत् (Electricity), नाभिकीय ऊर्जा (Nuclear Energy) आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है। इनमें अधिकांश का सम्बन्ध अग्निविज्ञान से है।

ऊर्जा के विषय में एक सामान्य वैज्ञानिक सिद्धान्त है कि Energy can neither be created nor destroyed, It can be transformed from one form to another form अर्थात् ऊर्जा न तो उत्पन्न की जा सकती है और न नष्ट होती है। इसका रूपान्तरण मात्र होता है।

भौतिकी का उक्त सिद्धान्त नवीन नहीं है इस सिद्धान्त के आधार सूत्र वैदिक मन्त्रों में निहित हैं। यजुर्वेद[2] के अनुसार अग्नि (Energy) अक्षय एवं अमर है। अग्नि (ऊर्जा) एक ही है।[3] उसका रूपान्तरण (Transformation) होता है। अतः इसे अनेक नामों से जाना जाता है। इस सन्दर्भ में निरुक्तकार यास्क अग्नि शब्द का निर्वचन करते हुए लिखते हैं–

* सहायक आचार्य, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

अग्निः कस्मात्? अग्रणी र्भवति। अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते। अंगं नयति सन्नममानः। अक्नोपनो भवति (न क्नोपयति आदयति न स्नेह्यति) स्थौलाष्ठीविः निभ्यः आख्यातेभ्यो जायते इति शाकपूणिः इताद्, अक्ताद्, दग्धाद्वा नीतात्। स खल्वेतेरकारमादत्ते, गकारमनक्तेर्वा दहते र्वा, नीः परः।[4]

ऋग्वेद में भी अग्नि के विभिन्न रूपों का वर्णन प्राप्त होता है। वहाँ अग्नि को इन्द्र, विष्णु, ब्रह्माः – **त्वं इन्द्रः, त्वं विष्णुः, त्वंब्रह्मा.....।**[5] वरुण, मित्र, अर्यमा– **त्वं वरुणः, त्वं मित्रः, त्वं अर्यमा.....।**[6] रुद्र, मरुत् पूषा– **त्वं रूद्रः त्वं मारूतं, त्वं पूषा .....।**[7] आदि देवताओं के रूप में अग्नि (ऊर्जा) को व्याख्यायित किया गया है। सामान्य जनमानस में शक्ति का स्त्रीरूप ही समझा एवं माना जाता है। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद में अग्नि को देवियों के रूप में भी वर्णित किया है– **त्वम् अदितिः, त्वं भारती, त्वम् इडा, त्वं सरस्वती।**[8]

अर्थात् गुण कर्म स्वभाव के अनुसार अग्नि (ऊर्जा) ही अदिति, इडा, सरस्वती और भारती है। प्रत्येक वैदिक देव एवं देवी ऊर्जा के ही विभिन्न रूप हैं। यह ऊर्जा कर्तृत्व के गुण धर्म के कारण ब्रह्मा है, धर्ता या पालक के रूप में विष्णु है, संहारक के रुप में रूद्र है।[9]

वैदिक अग्निशब्द के वाच्यार्थ पर विचार करते हुए डॉ. रामनाथ वेदालंकार लिखते हैं कि वेद मन्त्र प्रायः अध्यात्म, अधिदैवत, अधिभूत आदि विभिन्न प्रक्रियाओं से व्याख्यात हो सकते हैं। तदनुसार अग्निशब्द भी अनेकार्थवाची है। अध्यात्म में वह ब्रह्म, जीवात्मा, प्राण, मन, वाणी, जठराग्नि आदि अर्थो को अधिदैवत में अग्नि, विद्युत, सूर्य आदि अर्थों को, राजनीति में प्रधानमन्त्री, सेनापति, योद्धा, न्यायाधीश, राजदूत आदि अर्थों को, अधियज्ञ में आह्वनीयाग्नि, गार्हपत्याग्नि, होता, ऋत्विज, पुरोहित, शिक्षा के क्षेत्र में आचार्य, उपदेशक, समाज में – ऋषि, ब्राह्मण, क्षत्रियादि तथा माता–पिता, शिल्पी आदि अर्थों को द्योतित करता है। इसके कुछ प्रमाण भी डॉ. रामनाथ ने प्रस्तुत किये हैं। यथा **अग्नि दूतं वृणीमहे....।**[10] **विप्रो होतेह रक्षति.....।**[11],

अग्निं मन्ये पितरम् .....भ्रातरं ..... सखायम्.....।[12], त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिः .....।[13], ब्रह्म ह्यग्नि।[14], आत्मा वा अग्निः।[15], प्राणो वा अग्निः।[16], मन एवाग्नि।[17] यजमानों अग्निः।[18], विद्युदग्निः[19], आदित्योग्निः[20]।

उपर्युक्त समस्त उद्धरणों एवं व्याख्याओं से यह तो सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि ऊर्जा, बल, शक्ति रूप में अग्नि सूक्ष्म एवं स्थूल रूप में सदैव समस्त ब्रह्माण्ड में विद्यमान रहता है। इस ऊर्जा का समस्त प्राणिमात्र द्वारा स्वाभाविक रूप से प्रयोग किया जाता है। परन्तु ऊर्जा का उपयोग किसी विशेष प्रयोजन मात्र से किया जाना हो तो अनेक उपक्रम अपेक्षित होते हैं। इन विशिष्ट उपक्रमों एवं प्रयोगों के कारण स्वरूप अनेक वैज्ञानिक अविष्कार होते हैं। जिनसे मनुष्य के हितसाधक संसाधनों का आविर्भाव होता है। मानव प्रकृति से सुविधा एवं सरलता को प्राप्त करने की कामना करता है, इसी कारण वह सर्वदा नवीन आविष्कारों की और सतत उन्मुख एवं क्रियाशील रहता है। यह क्रियाशीलता नवीन अनुसन्धानों को जन्म देती है।

वैदिक संहिताओं में अग्नि को ही ऊर्जा का प्रतिनिधि माना गया है। अग्नितत्त्व की मीमांसा ही ऊर्जा का विवेचन है।[21]

वेदों में वर्णित समस्त देवताओं में अग्नि का प्रमुख स्थान है। अग्नि सम्बन्धी वैदिक मन्त्र अनेक रहस्यात्मकताओं से भरे है। इस सम्बन्ध में ऐसे तत्त्व भी वेदों में उपलब्ध होते हैं जो आधुनिक विज्ञान द्वारा ऊर्जा के सम्बन्ध में आविष्कृत किये गये हैं। इन आविष्कारों के मूल संकेतो का अन्वेषण वैदिकमन्त्रों में सहजता से किया जा सकता है।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में अग्नि (ऊर्जा) सम्बन्धी विज्ञान का अधुनातन अनुसन्धान उन्नीसवी शताब्दी में आरम्भ हुआ। सन् 1808 में डाल्टन नामक वैज्ञानिक ने अपना परमाणु सिद्धान्त प्रस्तुत किया। इससे हजारों वर्ष पूर्व महर्षि कणाद् द्वारा प्रणीत वैशेषिकदर्शन में डाल्टन के परमाणु सिद्धान्त के सभी बिन्दु बीजरूप में विद्यमान हैं। इसे इस रूप में भी कहा जा सकता है कि डाल्टन का परमाणु सिद्धान्त कणाद् के वैशेषिक दर्शन में

प्रतिपादित परमाणु– सिद्धान्त का ही प्रयोगशालीय या प्रयोगिक संस्करण मात्र है। 1896 से पूर्व आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं, द्वारा परमाणु (ऐटम) को पदार्थ का अन्तिम तथा अविभाज्य (इण्डिविजिबिल) कण माना जाता था। 1896 में पाश्चात्य वैज्ञानिक सर जे.जे. थॉम्सन ने गैसीय विद्युत विसर्जन के अध्ययन के आधार पर सर्वप्रथम इलेक्ट्रॉन के अस्तित्व की खोज की और संसार को बताया कि इलेक्ट्रान परमाणु से भी छोटा कण है और यह परमाणु में से निकलता है। इस प्रकार परमाणु की अविभाज्यता का सिद्धान्त खण्डित हो गया। इन सन्दर्भों से स्पष्ट हो रहा है कि 1896 के पूर्व विश्व का कोई वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक परमाणु से छोटे कण के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकता था। इस प्रसंग में आपको यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि 1896 से लगभग 20 वर्ष पूर्व सन् 1876 में महर्षि दयानन्द ने अपने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' नामक ग्रन्थ में वेद विषयक विचार के अन्तर्गत लिख दिया था कि ''परमाणु पदार्थ का अन्तिम अविभाज्य कण नहीं है– इसको भी छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजित किया जा सकता है।'' स्वामी दयानन्द सरस्वती का यह ज्ञान किसी प्रयोगशाला में प्रयोग के आधार पर अर्जित परिणाम से प्राप्त नहीं था, प्रत्युत वेद–शास्त्र आदि वैदिक वाङ्मय से प्राप्त किया था। इस प्रकार अनेक उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय वाङ्मय अग्नि (ऊर्जा) सम्बन्धी अनुसन्धानों से समृद्ध है।

ऋग्वेद में लगभग 1400 अग्निपरक मन्त्र विद्यमान हैं, जिनमें अग्नि का पूरा विज्ञान परिलक्षित होता है। अग्नि में समस्त कार्यों के सम्पादन का सामर्थ्य होने से इसे विश्वकर्मा भी कहते है। अग्नि (ऊर्जा) समस्त रूपों (शब्द, रूप, प्रकाश, गति आदि) को धारण करती है अतः इसे विश्वरूपा भी कहा गया है।

वेदों में अग्नि (ऊर्जा) विज्ञान के लिए अनेक पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग मिलता है जिनमें गविष्टि एवं अश्वमिष्टिः[22] शब्द प्रमुख हैं। गविष्टि (गो+इष्टि), यहाँ गो शब्द का अर्थ– सूर्य की किरणें हैं, अतः गविष्टि सूर्य–किरण–विज्ञान अर्थात् सूर्य की करणों का विवेचन व विश्लेषण है।

अश्वमिष्टि (अश्वं+इष्टि) शब्द का अर्थ है– अग्नि आदि की अश्वशक्ति या कार्य–परिमाण (Horse – Power, H.P) का विवेचन है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार अश्वशक्ति (H.P) 745.7 वाट प्रति सेकेण्ड है।

चारों वेदों में अग्नि (ऊर्जा) को सर्वव्यापक बताया है। यह द्युलोक, अन्तरिक्ष और भूमि के प्रत्येक कण में व्याप्त है। ऊर्जा के कारण ही गति, स्थिति और परिवर्तन होता है। अग्नि विश्व को चेतना प्रदान करती है। वही विश्व की गति का केन्द्र है और द्यावापृथिवी में व्याप्त है–

विश्वस्य केतुः, भुवनस्य गर्भः, आरोदसी अपृणात्।[23]

आ रोदसी भानुना भात्यन्तः।[24]

गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतिनाम्। गर्भो विश्वस्य भूतस्य।[25]

इस सर्वव्यापक अग्नि को ही आधुनिक विज्ञान पूर्णतः स्वीकार करता है। वर्तमान सर्वमान्य धारणा के अनुसार यह सम्पूर्ण सृष्टि ऊर्जा का ही विभिन्न रूप है। अर्थात् सृष्टि में जो कुछ भी दृश्यमान है, वह सब ऊर्जा ही है। द्रव्य (Matter) ऊर्जा का व्यक्तरूप है और ऊर्जा (Energy) द्रव्य का अव्यक्त रूप है। सृष्टि में द्रव्य और ऊर्जा का योग (Sum) सदैव स्थित (Constant) रहता है। द्रव्य का ऊर्जा में परिवर्तन आइंस्टाइन के नियम– ऊ = nxc^2, (ε=MC^2) अनुसार होता है जबकि ऊ (ऊर्जा, Energy, E) द (द्रव्यमान, Mass, M) तथा ब (प्रकाश का वेग, Velocity of Light, e= $3x10^8$ मीटर/सेकण्ड) है। रेडियो सक्रियता (Radeoactivity), परमाणु–विखण्डन (Atomic- Fission) आदि में जब द्रव्य का ह्रास (सवे) होता है तो उपर्युक्त सूत्र के अनुसार, समान मात्रा में ऊर्जा उत्पन्न होती है। इसी प्रकार ऊर्जा का जब क्षय होता है तो समान मात्रा में द्रव्य उत्पन्न होता है। अर्थात् द्रव्य और ऊर्जा परस्पर परिवर्तनीय (interconvertible) है। अर्थात् सृष्टि के समस्त स्थूल एवं सूक्ष्म पदार्थ ऊर्जा के रूप हैं।

वैदिक वाङ्मय में अग्नि का एक रूप वैश्विक ऊर्जा (Uviersal Energy) के रूप में भी स्वीकार किया गया है। इस हेतु वेदों में वैश्वानर शब्द

का बहुधा प्रयोग हुआ है–

वैश्वानरो विश्वकृत् ।[26]

वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनाम् ।[27]

वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिः ।[28]

आ सूर्ये..... ओषधीष्वप्सु ..... मानुषेषु ..... राजा ।[29]

यह वैश्वानर अग्नि ही सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का उत्पादक और सृष्टिकर्ता है। यही संसार का केन्द्र भी है। यह ही समस्त भूमण्डल को अपने आकर्षण से वश में किए हुए है। सूर्य की किरणों से लेकर मानव जगत् तक वृक्ष–वनस्पतियों में, जल में, समुद्र में इसका साम्राज्य है।

उपर्युक्त संक्षिप्त विवेचन से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में आग्नेय ऊर्जा के सम्बन्ध में पर्याप्त उल्लेख मिलता है जो वस्तुतः वर्तमान समय में प्रयोग में आने वाले लगभग सभी रूप कहे जा सकते हैं। पुनरपि इस सन्दर्भ में अपेक्षाकृत अधिक शोध की आवश्यकता है, जिससे वैदिक कालीन ऊर्जा विषयक ऋषि–दृष्टि स्पष्ट हो सके।

सन्दर्भ –

1. अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
   होतारं रत्नधातमम् ।। ऋग्वेद 1.1.1
2. मर्तेषु–अग्निरमृतो नि धायि। यजु. 12.24
   अग्निरमृतो अभवद् वयोभिः। यजु. 12.25
3. ऋग्वेद–10/83/3
4. निरुक्त 7.1
5. ऋग्वेद–2.1.3
6. ऋग्वेद–2.1.4
7. ऋग्वेद–2.1.6
8. ऋग्वेद–2.1.11
9. ऋग्वेद–2.1.1 –10 एवं 5.3.1.–5
10. ऋग्वेद–1.12.1

11. ऋग्वेद–1.14.9
12. ऋग्वेद–10.6.3
13. ऋग्वेद–1.31.1
14. शतपथ– 1.6.1.52
15. शतपथ– 21.7.3.12
16. शतपथ– 2.2.2.15
17. शतपथ– 10.1.2.3
18. शतपथ– 6.2.2.2
19. तै.आ. 2.14.1
20. शतपथ– 6.4.1.1
21. वेदों में विज्ञान, डॉ. कपिल देव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद, ज्ञानपुर भदोही, पृष्ठ–1
22. मघवन् गविष्टये ..... अश्वमिष्टये। ऋ. 8.61.7 आने अश्वमिष्टे। ऋग्वेद 2.6.2
23. यजुर्वेद– 12.23
24. ऋग्वेद– 10.45.4
25. यजुर्वेद– 12.37
26. अथर्ववेद 6.47.1
27. ऋग्वेद 1.59.1
28. ऋग्वेद 1.53.3
29. ऋग्वेद 1.53.3